Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत

(भाग-2)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM02

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत

(भाग–2)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

5. राजस्थान के लोक संगीत एवं लोक कलाएँ **5–36**

5.1 राजस्थान के लोक गीत 5

5.2 राजस्थान के लोक नृत्य 11

5.3 राजस्थान के लोक नाट्य 17

5.4 राजस्थान के लोक वाद्य 23

5.5 राजस्थान के लोक गीत गायक और वादक जातियाँ 30

6. राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ **37–54**

6.1 राजस्थानी भाषा 37

6.2 राजस्थान की बोलियाँ 38

6.3 राजस्थानी साहित्य की कृतियाँ, लोक साहित्य एवं आधुनिक साहित्य 41

6.4 राजस्थानी शब्दावली 48

7. महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल **55–78**

7.1 पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण 55

7.2 राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल एवं सर्किट्स 57

7.3 पर्यटकों के आगमन का स्वरूप 71

7.4 पर्यटन एक उद्योग के रूप में 72

7.5 अर्थव्यवस्था पर पर्यटन उद्योग का प्रभाव 74

8. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व **79–106**

8.1 राजस्थान के ऐतिहासिक व्यक्तित्व 79

8.2 राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन के व्यक्तित्व 86

8.3 राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका 95

8.4 राजस्थान के अमर शहीद 99

8.5 राजस्थान की आध्यात्मिक विभूतियाँ (संत, लोक देवता) 101

अध्याय
5

राजस्थान के लोक संगीत एवं लोक कलाएँ (Folk Music and Folk Art of Rajasthan)

गायन, वादन एवं नृत्य का सम्मिश्रण ही संगीत है जो जन-मानस के स्वाभाविक उद्‌गारों का प्रस्फुटन है। मानव स्वभाव से ही संगीत प्रेमी है। यही कारण है कि संगीत किसी भी प्रदेश या समुदाय का हो, मन-भावन ही लगता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोक गीतों को 'संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला' तो गांधीजी ने इन्हें 'जनता की भाषा और संस्कृति के पहरेदार' की संज्ञा दी है।

प्राचीन समय से ही राजस्थान वीर योद्धाओं की भूमि रही है जो अधिकांशत: कला प्रेमी भी थे। यही कारण है कि यहाँ ललित कलाओं को अधिक प्रश्रय मिला। यहाँ के 'वीर' युद्ध भूमि में प्रयाण करते समय संगीत की वीर रसात्मक ध्वनियों से प्रेरित होते थे। युद्ध के आरंभ होने से पूर्व वाद्यों के तारों की झंकार तथा शंख व नगाड़ों की गर्जना संपूर्ण वातावरण को गुंजायमान कर के योद्धाओं को उत्तेजित व उत्साहित कर देती थीं, जिससे उनमें मोह त्याग कर युद्ध में कूद पड़ने की भावना का संचार होता था। मध्य युग में यहाँ सिंधु राग की वीर रसात्मक ध्वनियाँ गुंजायमान रहीं। इसके अतिरिक्त यहाँ क्षेत्रीय राग भी प्रचलित रहे।

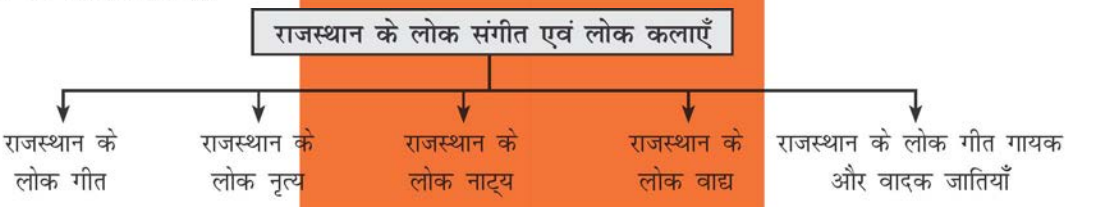

5.1 राजस्थान के लोक गीत *(Folk Songs of Rajasthan)*

राजस्थान में कला परंपरा बाहरी आक्रमणों के समय भी जीवंत रही। यहाँ के राजा-महाराजाओं द्वारा संगीतज्ञों एवं विद्वानों को जैसा सम्मान प्रदान किया गया, ऐसा शायद ही कहीं अन्यत्र किया गया हो। यही कारण है कि यहाँ संगीत परंपरा अक्षुण्ण रही।

- महाराजा मानसिंह के छोटे भाई माधव सिंह के आश्रय में ग्रंथकार 'पुण्डरीक विट्‌ठल' ने **'राग मंजरी'** और **'राग माला'** ग्रंथों की रचना की।
- राजा जयसिंह के आश्रय में संगीत ग्रंथ **'हस्तकार-रत्नावली'** लिखा गया, जिससे यहाँ संगीत कला के शास्त्रीय अध्ययन को प्रेरणा मिली।
- प्रताप सिंह एक संगीताचार्य एवं कवि थे जिन्होंने देश में उच्च कोटि के संगीतज्ञों का सम्मेलन करवाकर **'राधा गोविंद संगीत-सार'** नामक ग्रंथ की रचना करवाई।
- प्रताप सिंह के ही दरबारी कवि संगीतज्ञ उस्ताद चांद खाँ ने 'स्वर-सागर' ग्रंथ की रचना की।
- सवाई रामसिंह का काल भी कला व संगीत की दृष्टि से काफी समृद्ध रहा है।
- इस प्रकार राजस्थान में राम सिंह के पश्चात् माधो सिंह, भरतपुर के महाराजा जशवंत सिंह, जोधपुर के महाराजा मान सिंह, बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह, मेवाड़ के महाराणा कुम्भा व कृष्ण-भक्त मीराबाई, संत दादू, चरणदास इत्यादि द्वारा संगीत व लोक गीत विरासत को समृद्ध बनाया गया।

राजस्थान के प्रमुख संगीत घराने *(Major music houses of Rajasthan)*

घराने से तात्पर्य है, एक प्रकार की गुरु-शिष्य परंपरा। घराना, गुरु एवं उसके शिष्यों के सहयोग से बनता है जो विशेष प्रकार के गायन, वादन व नृत्य शैली का सूचक होता है। राजस्थान में जिन घरानों का विकास हुआ, उन्होंने भारत के संगीत को समृद्ध करने में योगदान दिया।

19. **मिरासी:** मूलत: मुस्लिम समाज के होते हैं तथा मुख्यतया मारवाड़-जोधपुर क्षेत्र में निवास करते हैं, इनमें स्त्रियाँ भी ऊँचा गायन करती हैं।
सारंगी वादन इनका मुख्य पेशा होता है।

राजस्थानी लोक-गीतों की पेशवर जातियाँ (एक नज़र में)

क्र.सं.	जाति	विवरण
1.	ढाढ़ी	राजस्थान के पश्चिमी भाग-बाड़मेर, जैसलमेर में रहने वाले ये 'मांगणियार' कहलाते हैं। ये हिंदू व मुस्लिम दोनों धर्मों के अनुयायी होते हैं। ये मध्यकाल से युद्ध भूमि में जोशीले गीतों के साथ सैनिकों में जोश भरते थे। ये कामायचा व खड़ताल बजाते हैं।
2.	भाट	ये यजमानों की वंशावलियों का लेखन व उनका बखान करते हैं।
3.	कामड़	डीडवाना, पोकरण व जैसलमेर आदि क्षेत्रों में रहने वाले ये लोग चिकारे या तंदूरा वाद्य यंत्र बजाते हैं व तेरहताली नृत्य में दक्ष होते हैं।
4.	लंगा	बाड़मेर के बड़वना क्षेत्र इस जाति का प्रमुख स्थान है। लंगा कलाकारों ने वर्तमान में विदेशों में भी अपनी कला की छाप छोड़ी है। इस जाति का प्रमुख वाद्ययंत्र सारंगी है। इसके अतिरिक्त यह कामायचा व खड़ताल भी बजाती है।
5.	मिरासी	मारवाड़ की मुस्लिम जाति, सारंगी वादन में दक्ष है और भाटों की तरह वंशावलियों का बखान करती है। ये मेवात में रहते हैं।
6.	जोगी	ये नाथपंथ के अनुयायी होते हैं जो गाने-बजाने का काम करते हैं। इनका मुख्य वाद्ययंत्र सारंगी व इकतारा है।
7.	भोपा	लोक देवी-देवताओं के भजन-गायन से आजीविका चलाने वाले ये भोपे रामदेवजी, पाबूजी, देवजी, माता जी, भैंरू जी इत्यादि देवी-देवताओं के होते हैं।
8.	राणा	जयपुर व शेखावाटी क्षेत्र में रहने वाले ये लोग ढोल वादन में दक्ष होते हैं तथा नाट्य कला के भी ज्ञाता हैं।
9.	कलावंत	ख्याल व ध्रुपद गायिकी में दक्ष ये निपुण गायक-वादक होते हैं। जयपुर का डागर घराना इसी जाति का है।

राजस्थान की ये लोक-गीत गायन-वादन में दक्ष पेशेवर जातियाँ अपनी मनमोहक भाव-भंगिमाओं व स्वर लहरियों से लोक जीवन में नित नए रंग भरती आई हैं। ये भरपूर मनोरंजन करने के बावजूद भी समाज में अपेक्षित सम्मान आज तक प्राप्त नहीं कर पाई हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि इन्हें उचित सम्मान व संरक्षण प्रदान किया जाए।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- **चारबेत:** (चारबैत) टोंक में प्रचलित पठानी मूल का लोक नाट्य जो अब्दुल करीम खाँ खलीफा करीम खाँ निहंग व फैजुल्ला खाँ के प्रोत्साहन से प्रारंभ हुआ। कव्वाली के समान इसमें भी घुटने के बल बैठकर गाते हैं व 'डफ' (ढफ) वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- भैंसासुर की फड़ एकमात्र ऐसी फड़ है, जिसका वाचन नहीं किया जाता। इसे 'बावरी जाति' के लोग चोरी करने जाते समय पूजते हैं।
- **भवाई:** राजस्थान के मेवाड़, मालवा में मुख्य रूप से निवास करने वाली भील, मीणा, धाकड़, डांगी आदि जातियाँ 'भवाई' कहलाती हैं। ये गायन-वादन के समय मंजीरा-ढोल व सारंगी आदि का उपयोग करते हैं।
- **सरगड़ा:** पूर्व समय में तीर बनाने के कार्य करने के कारण इनका नाम सरगाराह या सरगड़ा पड़ा। ये कच्छी घोड़ी नृत्य में सुंदर काम करते हैं।
- **जोगी:** सुल्तान निहालदे के पावड़े गाते हैं व गोरखनाथ संप्रदाय को मानते हैं। ये नाथपंथी हैं और भरथरी, गोपीचंद और शिवजी के गीत, सारंगी वादन के साथ गाते हैं।
- नदी पाट राजस्थान का लोक खेल है।

- कालबेलिया नृत्य को 2010 में UNESCO द्वारा अमूर्त विरासत श्रेणी में सम्मिलित किया गया है।
- **रावलों का मांदल:** राजस्थानी लोक वाद्यों में यही एक ऐसा वाद्ययंत्र है जिसपर पखावज की भाँति गट्टों या गुटकों का प्रयोग होता है। यह वाद्य केवल चारणों के रावल (चाचक) के पास उपलब्ध है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से राजस्थान के किस क्षेत्र से अलीबख्शी ख्याल संबद्ध है? **RAS (Pre) 2016**
   (1) करौली (2) चिड़ावा
   (3) अलवर (4) चित्तौड़
2. राजस्थान का शंकरिया नृत्य किससे संबंधित है? **RAS (Pre) 2016**
   (1) कालबेलिया
   (2) भील
   (3) सहरिया
   (4) तेरहताली
3. राजस्थान का एकमात्र ऐसा लोकवाद्य जिसकी डोरी में तनाव के लिये पखावज की तरह लकड़ी के गुटके डाले जाते हैं। **RAS (Pre) 2013**
   (1) तासा
   (2) रावलों की मांदल
   (3) ढाक
   (4) डेरू
4. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही है? **RAS (Pre) 2013**
   (1) खड़ताल – सुषिर वाद्य
   (2) रबाब – तत् वाद्य
   (3) बाँकिया – घन वाद्य
   (4) डेरू – सुषिर वाद्य
5. निम्नलिखित में से कौन-सा सुषिर वाद्य नहीं है? **RAS (Pre) 2013**
   (1) सुरनाई
   (2) अलगोजा
   (3) नागफणी
   (4) कामायचा
6. गोपी जी भट्ट राजस्थान की किस लोक नृत्य शैली के कलाकार हैं? **RAS (Pre) 2012**
   (1) तमाशा
   (2) स्वांग
   (3) रम्मत
   (4) नौटंकी
7. राजस्थान के लोकनृत्य एवं उनके प्रचलन क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही नहीं है? **RAS (Pre) 2012**
   (1) गीदड़ नृत्य – शेखावाटी
   (2) ढोल नृत्य – जालौर
   (3) बमरसिया नृत्य – बीकानेर
   (4) डांडिया नृत्य – मारवाड़
8. भीलों का प्रसिद्ध लोक नाट्य कौन-सा है? **RAS (Pre) 2012**
   (1) गवरी (2) स्वांग
   (3) तमाशा (4) रम्मत
9. मुँह से बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र है: **RAS (Pre) 2007**
   (1) इकतारा
   (2) अलगोजा
   (3) नौबत
   (4) ताशा
10. वालर नृत्य जिनके द्वारा किया जाता है, वे हैं– **RAS (Pre) 2000**
    (1) भवाई
    (2) बंजारे
    (3) कालबेलिया
    (4) गरासिया
11. शेखावाटी के प्रसिद्ध नृत्य का नाम है–
    (1) घूमर
    (2) गीदड़
    (3) घेर
    (4) तेरहताली
12. नृत्य-नाट्य 'सूरदास' एवं 'शंकरिया' किस पेशेवर जाति से संबंध रखते हैं?
    (1) पातुर
    (2) नट
    (3) भाट
    (4) भवाई

13. लोक गीतों का सर्वाधिक महत्त्व है–
(1) मनोरंजन के लिये
(2) संगीत के विकास में
(3) परंपराओं के संरक्षण में
(4) जीविकोपार्जन के लिये

14. वधू के घर स्त्रियों द्वारा वर की बारात का डेरा देखने जाने का प्रसंग राजस्थान के किन गीतों में मिलता है?
(1) जच्चा (2) सीठणे
(3) जलो (4) घुडले

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा उनके नीचे दिये गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिये।

सूची-I (नृत्य)	सूची-II (क्षेत्र)
A. ढोल नृत्य	(i) भीलवाड़ा
B. बिंदौरी नृत्य	(ii) नाथद्वारा
C. डांग नृत्य	(iii) झालावाड़
D. नाहर नृत्य	(iv) जालौर

कूट:

	A	B	C	D
(1)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(2)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(3)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(4)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

16. फड़ क्या होते हैं?
(1) दीवार पर बने चित्र (2) बर्तन पर बने चित्र
(3) शरीर पर बने चित्र (4) कपड़ों पर बने चित्र

17. निम्न में से असंगत को छाँटिये–

नृत्य		जाति
(1) रसिया नृत्य	–	मीणा
(2) नेजा नृत्य	–	भील
(3) लहँगी नृत्य	–	बादनिया
(4) रायण नृत्य	–	गरासिया

18. प्रसिद्ध राजस्थानी 'गैर नृत्य' में भाग लेते हैं–
(1) केवल पुरुष
(2) केवल महिलाएँ
(3) पुरुष व महिलाएँ दोनों
(4) केवल बच्चे

19. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा उनके नीचे दिये गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिये।

सूची-I (लोक गीत)	सूची-II (संबंधित क्षेत्र)
A. मूमल	(i) मारवाड़
B. ढोलामारू	(ii) जैसलमेर
C. बीछूड़ों	(iii) सिरोही
D. घुड़ला	(iv) हाड़ौती

कूट:

	A	B	C	D
(1)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(2)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(3)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(4)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

उत्तरमाला

1. (3)	2. (1)	3. (2)	4. (2)	5. (4)	6. (1)	7. (3)	8. (1)	9. (2)	10. (4)
11. (2)	12. (4)	13. (3)	14. (3)	15. (3)	16. (4)	17. (3)	18. (1)	19. (1)	

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में दीजिये)

1. गैर नृत्य
2. कुचामनी ख्याल
3. गीदड़ नृत्य
4. रावणहत्था
5. राग मंजरी
6. घूमर
7. चिड़ावा ख्याल
8. हवेली संगीत
9. अलगोजा
10. कच्छी घोड़ी

11. अग्नि नृत्य
12. बम नृत्य
13. भपंग
14. गोरबंद
15. घुड़ला नृत्य
16. गवरी
17. तत् वाद्य
18. भाट
19. ढोली

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. रम्मत
2. राजस्थान के लोक संगीत की विशिष्टताओं की व्याख्या कीजिये।
3. तुर्रा-कलंगी को संक्षेप में समझाइये।
4. शेखावाटी ख्याल
5. अवनद्ध वाद्यों को संक्षेप में बताइये।
6. कामड़
7. चारबेत

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. राजस्थान के लोक संगीत में वाद्य यंत्रों के प्रकारों को बताते हुए उनकी भूमिका को समझाइये।
2. राजस्थान में लोक गीतों व लोक नृत्यों के महत्त्व पर एक टिप्पणी कीजिये।
3. राजस्थानी संस्कृति में लोक नाट्यों की भूमिका बताइये।
4. राजस्थान के लोक गीत गायक व वादक जातियों पर लेख लिखिये।

अध्याय
6

राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ (Important Works of Rajasthani Literature and Regional Dialects)

राजस्थानी साहित्य से तात्पर्य राजस्थान के भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा में लिखित साहित्य से है। राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति गुर्जरी अपभ्रंश से मानी जाती है। उद्योतन सूरी द्वारा लिखित 'कुवलयमाला' में वर्णित देशी भाषाओं में 'मरुभाषा' को भी वर्णित किया गया है।

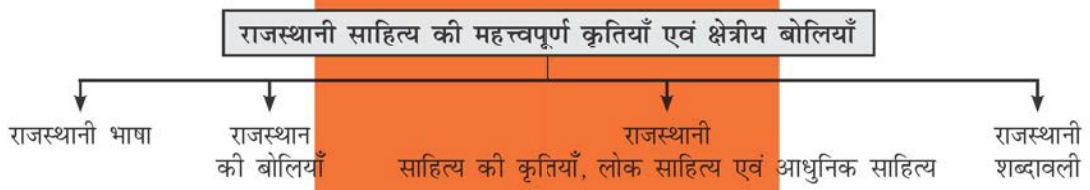

6.1 राजस्थानी भाषा *(Rajasthani Language)*

राजस्थानी भाषा का उद्‌भव

राजस्थानी के भाषा वंश वृक्ष को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है। राजस्थानी भाषा के विकास में आर्य भाषा महत्त्वपूर्ण है, जो भारोपीय भाषा का ही एक भाग है।

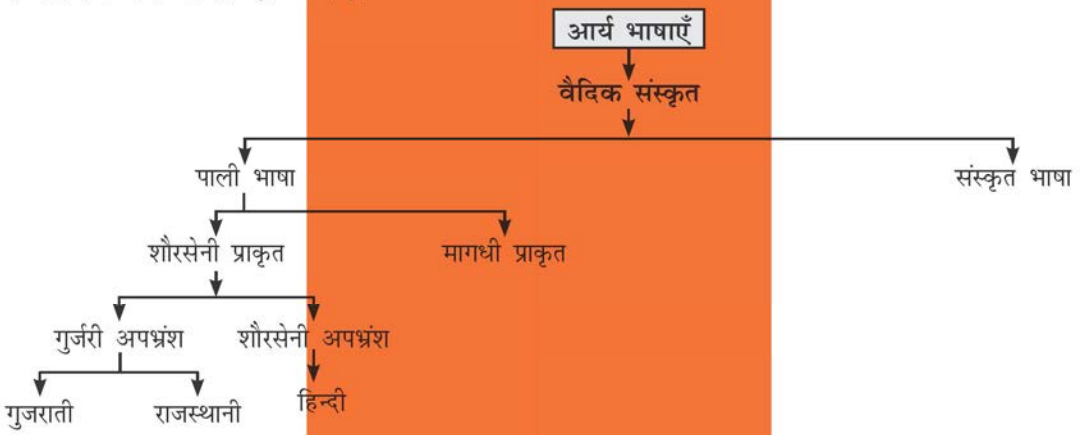

प्राचीन समय से राजस्थान की प्रधान भाषा 'मरुभाषा' रही है। राजस्थानी भाषा का उद्‌गम एवं विकास अपभ्रंश भाषा से हुआ है। अनेक भाषा विशेषज्ञों ने इसे गुजराती भाषा के निकट माना। डॉ. टेसीटोरी के अनुसार, गुर्जरी अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई है।

उद्‌गम : भारतीय आधुनिक भाषाओं की जननी 'अपभ्रंश' को माना जाता है जिसे प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की स्थिति मानते हैं।

- आभीर (उत्तर भारत की प्राचीन जाति) जिन-जिन स्थानों पर गए वहाँ की प्राकृत को अपनाकर उनमें निज स्वभाव या भाषा-संस्कारानुकूल स्वर या उच्चारण संबंधी परिवर्तन कर दिये और इन्हीं परिवर्तित या विकसित भाषाओं को 'अपभ्रंश' कहा गया।
- **गुर्जरी अपभ्रंश :** अनेक विद्वानों के मध्य राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति को लेकर अनेक मत रहे हैं। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी इसकी उत्पत्ति 'सौराष्ट्री अपभ्रंश' से तो डॉ. ग्रियर्सन 'नागर अपभ्रंश' से मानते हैं।

अध्याय
7

महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल (Important Tourist Destination)

पर्यटन से तात्पर्य एक ऐसी यात्रा से है जो मनोरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन (World Tourism Organization) के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो अपने मूल स्थान से भिन्न वातावरण वाले स्थानों की यात्रा करते हैं। यह दौरा ज़्यादा-से-ज़्यादा एक साल के लिये मनोरंजन, व्यापार एवं अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। यह यात्रा उस स्थान पर किसी खास क्रिया से संबंधित नहीं होती है।

भारतीय प्राच्य ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति, संतुष्टि व ज्ञानार्जन के लिये पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि-मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्त्व दिया है। प्राचीन गुरुओं (ब्राह्मणों, ऋषियों तपस्वियों) ने भी यह कहकर कि 'बिना पर्यटन मानव अंधकार-प्रेमी होकर रह जाएगा', पर्यटन के महत्त्व को बताया। विद्वान संत ऑगस्टिन ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'बिना विश्व दर्शन के ज्ञान अधूरा है।'

संयुक्त राष्ट्र ने पर्यटन के तीन बुनियादी रूपों को मिलाकर इसकी तीन विभिन्न श्रेणियाँ व्युत्पन्न की हैं, ये हैं- घरेलू पर्यटन, राष्ट्रीय पर्यटन (इनबाउंड टूरिज़्म), अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन (आउटबाउंड टूरिज़्म)।

रंग-बिरंगे राजस्थान की प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विविधता देशी तथा विदेशी पर्यटकों को हमेशा से आकर्षित करती रही है। देश में आने वाले पर्यटक यहाँ की विविधतापूर्ण मनमोहक छटा के कारण ही राजस्थान आना पसंद करते हैं। पर्यटन से न केवल राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रसार होता है, अपितु आय एवं रोज़गार के सुअवसर भी उपलब्ध होते हैं।

जहाँ एक ओर राजस्थान यहाँ के योद्धाओं की वीरतापूर्ण शौर्यगाथाओं से परिचय कराता है वहीं दूसरी ओर दस्तकारों, शिल्पियों, लेखकों व कवियों पर भी गर्व करता है। यहाँ की हवेलियाँ, दुर्ग, स्तंभ व प्राचीन स्मारक इसके गौरवपूर्ण इतिहास की याद दिलाते हैं। यहाँ की शिल्प व वास्तुकला, त्यौहार, कला, संगीत एवं लोककलाएँ संपूर्ण विश्व में पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं। यहाँ के मंदिर, दुर्ग, मस्जिद, अभयारण्य, झीलें एवं मरुस्थल मनमोहक और सुरम्य पर्यटन केंद्रों के रूप में विकसित हैं।

राजस्थान को यहाँ की प्राचीन गौरवगाथाओं, कला एवं संस्कृतियों, तीर्थस्थलों, प्राकृतिक सौंदर्य, पशु-पक्षी अभयारण्यों एवं ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश-विदेश में अत्यधिक सराहा जाता है। यही कारण है कि राजस्थान आए बिना पर्यटकों की भारत यात्रा अधूरी रहती है। राजस्थान में पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है क्योंकि इससे काफी मात्रा में विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है। विश्व में पर्यटन एक ऐसे उद्योग के रूप में पनपा है जिसकी वृद्धि दर सर्वाधिक है। पर्यटन में अन्य आर्थिक क्षेत्रों की तुलना में निवेश से सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभ सृजित होता है।

कर्नल जेम्स टॉड द्वारा लिखित 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' नामक पुस्तक में राजस्थान के पर्यटन महत्त्व का विशद वर्णन है।

7.1 पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण *(Classification of Tourist Destination)*

राजस्थान के पर्यटन स्थलों को अग्रांकित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है-

प्राकृतिक स्थल : प्रकृति का वरदान ही रहा है कि यहाँ अनेक ऐसे सुरम्य स्थल हैं जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं- अजमेर की पुष्कर घाटी, भीलवाड़ा में मेनाल नदी पर मेनाल जल प्रपात, सवाई माधोपुर का

अध्याय
8

राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व (Major Personalities of Rajasthan)

राजस्थान अपने गौरवमयी अतीत के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इस इतिहास के हर क्षेत्र में यहाँ ऐसी महान विभूतियाँ हुईं जिन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया और इतिहास में अमर हो गए। विदेशी आक्रमणकारियों से स्वदेशी धरती की रक्षा करने वाले वीर योद्धा हों या संत परंपरा का निर्वाह करने वाले संत, कला एवं साहित्य को समृद्ध बनाने वाले कलाकार हों या समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले साहसी व्यक्ति सभी के द्वारा यहाँ का इतिहास समृद्ध बना। पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी यहाँ के इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करवाया।

8.1 राजस्थान के ऐतिहासिक व्यक्तित्व *(Historical Personalities of Rajasthan)*

- **बप्पा रावल:** 'राज प्रशस्ति' के अनुसार बप्पा ने संवत् 734 में चितौड़ के शासक मानमोरी को परास्त कर चित्तौड़ पर कब्ज़ा जमाया (गुरु हारीत ऋषि के आशीर्वाद से)। वे मेवाड़ के राजवंश में आठवें क्रम के राजा बने। एकलिंग जी का मंदिर इन्हीं के द्वारा बनवाया गया। इन्हें पिता तुल्य सम्मान प्राप्त होने के कारण ही 'रावल' नाम दिया गया। जी.एच. ओझा के अनुसार, बप्पा का वास्तविक नाम कालभोज था। बप्पा कालभोज की उपाधि थी।
- **दुल्हे राय:** 1137 ई. में दौसा में मीणाओं को और फिर बड़गुर्जरों को हराकर ढूँढ़ाड़ में नवीन राज्य की स्थापना की। ये कच्छवाहा वंश की नींव रखने वाले शासक थे।
- **राव सीहा:** जोधपुर में राठौड़ राज्य की स्थापना करने वाला प्रथम राठौड़ वंशज। पृथ्वीराज रासो में इन्हें कन्नौजिया गहड़वाल बताया गया। नैणसी द्वारा भी जोधपुर के राठौड़ों को कन्नौज से आया बताया गया।
- **वासुदेव:** यह सांभर (प्राचीन नाम शाकम्भरी) या सपादलक्ष के चौहानों का आदिपुरुष था।
- **अजयराज:** 1133 ई. में अजमेर की स्थापना करने वाले इस शासक ने वासुदेव की साम्राज्य शक्ति को सुदृढ़ किया। इन्हीं का काल चौहानों के साम्राज्य-निर्माण का काल माना जाता है।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय:** 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी को पराजित किया, किंतु 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में हार गया। जयचंद्र की पुत्री संयोगिता पृथ्वीराज चौहान की पत्नी थी। इसकी पराजय के पश्चात् भारत में तुर्की शासन की नींव पड़ी।
- **राणा रतनसिंह:** ये जब मेवाड़ की गद्दी पर बैठे तो 1303 ई. में खिलजी का आक्रमण चित्तौड़ पर हुआ। रतनसिंह धोखे से कैद कर लिये गए। इसी समय दो वीरों गोरा एवं बादल द्वारा रतन सिंह कैद से मुक्त करा लिये गए। कुछ इतिहासकार इन्हें 'भीम सिंह' के नाम से भी जानते हैं।
- **महाराणा हम्मीर:** अपने दृढ़ निश्चय, वीरता हेतु विख्यात थे। समस्त जीवन काल में कुल सत्रह युद्ध लड़े। सोलह युद्धों में विजयश्री ने इनका वरण किया। 1301 ई. में अलाउद्दीन ने रणथंभौर पर आक्रमण किया, जो इनके जीवन काल का अंतिम व सत्रहवाँ युद्ध था।
  - हम्मीर वीर, उदार एवं शरणागत की रक्षा करने वाले शासक थे। नयनचंद्र सूरी के 'हम्मीर महाकाव्य', जोधराज के 'हम्मीर रासो', चंद्रशेखर के 'हम्मीर हठ' नामक ग्रंथों से हम्मीर के शौर्य की जानकारी मिलती है। हम्मीर के बारे

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456